E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में पुष्पचयन करती हुई शकुन्तला की दोनों सखियाँ अनसूया और प्रियंवदा प्रवेश करती हैं। उनके वार्तालाप से ज्ञात होता है कि राजा और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हो गया है।

गान्धर्व विवाह के शीघ्र बाद ही राजा शकुन्तला को शीघ्र लिवा जाने का आश्वासन देकर हस्तिनापुर चला गया है। शकुन्तला राजा का स्मरण करती हुई चित्रलिखित सी कुटी में बैठी है। तभी दुर्वासा ऋषि का आगमन होता है। शकुन्तला से अतिथि सत्कार न पाकर कोपराट् दुर्वासा उसको अभिशाप दे देते हैं- "जिसका स्मरण करती हुई तुम मेरे जैसे तपस्वी का सत्कार नहीं कर रही हो वह प्रणयी याद दिलाये जाने पर भी तुम्हें पहचानेगा नहीं"। उद्विग्नमना शकुन्तला कुछ भी नहीं सुन पाती। उसकी सखियाँ यह सब कुछ सुन लेती हैं और शाप निवारण के लिये प्रियंवदा प्रस्थान कर देती है। अत्यधिक अनुनय-विनय के पश्चात् दुर्वासा आश्वासन देते हैं कि अभिज्ञान (आभरण) के दर्शन से शाप मुक्ति हो सकती है।

प्रियंवदा और अनसूया दुर्वासा के शाप की बात न तो शकुन्तला को, न ही किसी अन्य को बताती हैं। वे दोनों इसलिये किसी प्रकार धैर्य धारण करती हैं क्योंकि राजा ने स्वयं जाते समय अपनी नामाङ्कित अंगूठी स्मृतिरूप में शकुन्तला को पहनायी थी। इस प्रकार शकुन्तला तो स्वयं ही शाप मुक्त हो सकती है।

ऋषि कण्व सोमतीर्थ से वापस आ जाते हैं। अनसूया विचार करती है कि शकुन्तला के आपन्नसत्त्वा होने के वृत्तान्त से महर्षि कण्व को कैसे अवगत कराया जाय। उधर ऋषि कण्व को आकाशवाणी सुनायी देती है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है और वह

आपन्नसत्वा है। ऋषि इस विवाह का समर्थन करते हैं एवं शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए गौतमी, शार्ङ्गरव आदि को आदेश देते हैं।

शकुन्तला की विदाई की तैयारी प्रारम्भ हो जाती है। इस मङ्गल बेला में वनवृक्षों से रेशमी वस्त्र, आभूषण एवं प्रसाधन-सामग्री प्राप्त हो जाती है। पतिगृह के लिये प्रस्थान करने के समय तपस्वी वीतरागी कण्व का गला भर जाता है। सारा तपोवन शकुन्तला के वियोग से व्यथित हो जाता है। मृगशावक शकुन्तला के आँचल से लिपट जाता है। हिरणियाँ जुगाली करना तथा मयूर नाचना छोड़ देते हैं। चेतन जगत् की बात तो दूर तपोवन के जड़ जगत् के लिये भी शकुन्तला का वियोग असह्य हो जाता है। महर्षि कण्व राजा के लिये सन्देश भेजते हैं कि इसे राजा अपनी पत्नियों में सम्मानपूर्वक स्थान दे। तदनन्तर वे शकुन्तला को कर्तव्य शिक्षा देते हैं। शकुन्तला पिता के चरणों में गिर पड़ती है तथा दोनों सखियों का आलिङ्गन करती है।

सखियाँ शकुन्तला से बतलाती हैं कि यदि राजा उसे न पहचाने तब उसके स्मरण चिह्न अंगूठी को वह दिखला देगी। तत्पश्चात् शकुन्तला गौतमी, शार्ङ्गरव एवं शारद्वत के साथ चली जाती है। दोनों सखियाँ विलाप करती रहती हैं। शकुन्तला को पतिगृह भेजकर कुलपति कण्व हार्दिक शान्ति का अनुभव करते हैं।